नामदान की तैयारी

1. कड़वे बोल न बोल तू,
मेरी बात को मान ।
घाव प्रकृति में करें यह,
कैसे हो कल्याण ।।

2. छोड़ो उग्र स्वभाव को,
मन में लघुता धार ।
बिन प्रयास के सब मिले,
धन, संपत्ति, सुख, सार ।।

3. गुस्सा मन में हो नहीं,

मन हो नम्र, स्वभाव ।

अन्दर से मन झुके खुद,

समदृष्टि, समभाव ।।

4. गुस्सा मन में किया यदि,

कर्म में वह लिखि जाय ।

कर्म से बनते भाग्य हैं,

भाग्य से "जीवन" पाय ।।

5. कर्मों का संसार यह,
भेद कर्म का जान ।
सुख, दुःख मिलते कर्म से,
कर्म से बने महान ।।

6. मन की अकड़ को छोड़ दे,
मन से झुकना सीख ।
लेने का यह नियम है,
प्रकृति से लेना सीख ।।

7. “माया” हैं सब इन्द्रियाँ,

मन नहिं इनमें लिप्त ।

दासी हो सब इन्द्रियाँ,

मन, इन्द्रियों से मुक्त ।।

8. मन, इन्द्रियों में हो नहीं,

इन्द्रियाँ, मन के साथ ।

मन की दृष्टि “अनन्त” पर,

मन, अनन्त के साथ ।।

9. इन्द्रियों से मन पलटकर,

ऊपर को कर धार ।

भाव, विचार सम करो,

बदल जाय संसार ।।

10. नामदान को प्राप्त कर,

तुरत ही बदलो दृष्टि ।

सहज हो मन और सुरत सब,

बदले तेरी सृष्टि ।।

11. जिसको सृष्टि है मानता,
वह ब्रम्हा की सृष्टि ।
अपनी सृष्टि को जान तू,
प्राप्त करो वह दृष्टि ।।

12. जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि,
नियम सनातन मान ।
दृष्टि विवेक की प्राप्त कर,
करो सृष्टि निर्माण ।।

13. सात्विक वाणी बोलिये,

सात्विक होय विचार ।

सात्विक भोजन खाइये,

सुन्दर हो संसार ।।

14. सबको अपना मानिये,

सबसे करिये प्रेम ।

प्रकृति तुम्हारी होइ रहै,

यह संसार का नेम ।।

15. कपट दृष्टि, छल दृष्टि को,
चतुराई को छोड़ ।
द्वेष दृष्टि को छोड़ दे,
सबको प्रेम से जोड़ ।।

16. लालच, लोभ को छोड़कर,
प्रकृति से लेना सीख ।
देती केवल प्रकृति है,
सहज, समर्पण सीख ।।

17. मन बर्तन को बड़ा कर,
गहराई को धार ।
गहरे बनो समुद्र सम,
जीवन का यह सार ।।

18. टेंशन, गुस्सा, छल, कपट,
ईर्ष्या, द्वेष न होय ।
फिर तू मन को सहज कर,
तुरतै निर्मल होय ।।

19. निर्मल मन से सब मिले,
"आतमघट" संसार ।
सन्मुख खुद होय जाय मन,
लघुता, समता धार ।।

20. मन निर्मल और सहज से
मन सन्मुख होय जाय ।
कायाकल्प तुरन्त हो,
मन पूरण होय जाय ।।

21. सत्यनाम जैसे मिला,

सद्गुरु मिल गया जान ।

दोनों मिलते साथ में,

भेद अलौकिक जान ।।

22. सत्यनाम, सद्गुरु मिले,

मन निर्मल होय जाय ।

केवल इतना कीजिये,

बाकी खुद मिलि जाय ।।

23. मन झुकना यदि सीख ले,
शरणागत होय जाय ।
बिन खोजे सद्गुरु मिले,
जनम सुफल होय जाय ।।

24. बिन सद्गुरु डूबे सभी,
कोई हुआ न पार ।
माया और भव जाल से,
जीव को होना पार ।।

25. भ्रमण शून्य पर कर रहा,
ईश्वर अंश है जीव ।
शून्य पे कुछ मिलता नहीं,
शून्य को छोड़े जीव ।।

26. अंश अनन्त का जीव है,
खोजे जीव, अनन्त ।
सब कुछ मिलता वहीं से,
खोजे जीव तुरन्त ।।

27. सुमिरन, मन जो याद कर,
मन का मौन है ध्यान।
भजन सुरत से बंदगी,
सहज से पद निर्वाण।।

28. जिसका सुमिरन जगत मे,
वही है मिलता जान ।
सुमिरन करो अधर्म का,
हो कैसे कल्याण ।।

29. गीता, रामायण सभी,
वेद, शास्त्र और ग्रंथ ।
धर्म और मत और पंथ सब,
धर्म सिखाते संत ।।

30. धर्म, अधर्म का युद्ध है,
यह सारा अध्यात्म ।
रावण, अधर्म प्रतीक है,
धर्म प्रतीक है राम ।।

31. विजय धर्म की, अधर्म पर,
बनें है सब त्योहार ।
होली और दीपावली,
और भी सब त्योहार ।।

32. जीत धर्म की हो सदा,
इसीलिए अवतार ।
सत्यनरायन की कथा,
जानो सत्य का सार ।।

33. धर्म, अधर्म के युद्ध मे,
खड़ा बीच में जीव ।
धर्म तरफ जब यह बढ़े,
मूल में पावै पीव ।।

34. जागने और सोने के बीच का पल,
ध्यान, भजन के अन्त ।
आतमघट और केन्द्र पर,
मिलते प्लान तुरन्त ।।

35. प्लान वहाँ से प्राप्तकर,
उन पर करना कर्म ।
गति अकर्म की प्राप्त कर,
पूर्ण करो सब कर्म ।।

36. जिसके सन्मुख होय मन,
वही हो मन का रूप ।
सन्मुख होय अनन्त के,
तब मन होवे भूप ।।

37. सन्मुख होय प्रकाश के,
देव रूप होय जाय ।
जब सन्मुख हो “नाद” के,
ब्रह्म रूप होय जाय ।।

38. सन्मुख होय अनन्त के,
मन पूरण होय जाय ।
यही पूर्ण अध्यात्म है,
मन अरूप होय जाय ।।

39. “पद तीसरे” के रूप दो,
“सुरत” “निरत” हैं जान ।
सुनने को कहते “सुरत”
“निरत” देखना मान ।।

40. “सुरत” “निरत” स्थिर करो,
स्थिर “भाव” विचार ।
“आतमघट” परगट तुरत,
सन्मुख मन के धार ।।

41. परमतत्व को खोजना,

तत्वों से हो मुक्त ।

“मन” और “जीव” अनन्त हो,

“जीव” “धार” से युक्त ।।

42. मन, माया को जीत ले,

बिना धनुष, बिना बाण ।

सूर-वीर उसको कहें,

पावै पद निर्वाण ।।

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)